स्याही
मैदान
गोट
गजरा
बद्धी
गट्टे
मेटल
गुड़री (अंदर)
गद्दी
स्याही
लव
चाँटी
गजरा
बद्धी
लकड़ी
गट्टे
गुड़री (अंदर)
गद्दी

तबले के अंग

तबला–वर्णन

आधुनिक काल में गायन, वादन तथा नृत्य की संगति में तबले का प्रयोग होता है। तबले के पूर्व यही स्थान पखावज अथवा मृदंग को प्राप्त था। कुछ दिनों से तबले का स्वतन्त्र –वादन भी अधिक लोक–प्रिय होता जा रहा हैं। स्थूल रूप से तबले को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है, दाहिना तबला जिसे कुछ लोग दाहिना भी कहते हैं और बायां अथवा डग्गा। नीचे हम दोनों के विभिन्न अंगों पर विचार करेंगे।

दाहिना तबला के अंग

क. **लकड़ी** – यह अधिकतर कटहल, आम , खैर, सागौन अथवा विजयसाल की लकडी की होती है जो अन्दर से खोखली होती है। इसकी आकृति गोल, ऊवा की परिधि का व्यास लगभग 5–6 इंच और नीचे की परिधि लगभग 9 इंच तथा लगभग एक फीट ऊंची होती है।

ख. **पूड़ी** – लकड़ी के मुंह पर मढ़े हुए पूरे चमड़ो पूड़ी कहते है। अतः चांटी, लव, स्याही और खाल का संयुक्त नाम पूड़ी है। यह बकरे के खाल की होती है और लकड़ी के ऊपर बद्धी से कसी रहती है।

ग. **गजरा** – पूड़ी के चारों ओर चमड़े की मोटी माला होती है जिसे गजरा कहते हैं। इसमें 16 छिद्र होते हैं जिनमें से बद्दी गुजरती है।

घ. **चांटी** – पूड़ी के किनारे–किनारे अंदर की तरफ लगी हुई चमड़े की पट्टी को चांटी कहते है।

ड. **स्याही** – पूड़ी के बीचो–बीच चांटी से लगभग एक इंच की दूरी पर चंद्राकार काले मसाले को स्याही कहते हैं। पतली स्याही लगाने से तबला ऊंचे स्वर से और मोटी स्याही से नीचे स्वर से मिलता है।

च. **लव** – चांटी और स्याही के बीच खाली स्थान को लव अथवा मैदान कहते है।

छ. **बद्धी** – गजरे के बीच से जाने वाली चमड़े की लम्बी पट्टी को बद्धी कहते हैं । बद्धी से पूड़ी कसी रहती है और गट्टों पर से होती हुई ऊपर–नीचे के गजरों में फंसी रहती है।

ज. **गट्टा** – दाहिने तबले पर लगभग 2 इंच लम्बी लकड़ी के 8 गोल टुकड़े होते है, जिन्हें गट्टा कहते हैं। गट्टा बद्धी से दबे रहते हैं। उन्हें नीचे खिसकाने से तबले का स्वर ऊपर और ऊपर खिसकाने से नीचे जाता है।

झ. **गुड़री** – तबले की पेंदी में चमड़े की बनी हुई एक माला जिसमें से बद्धी निकलती है गुड़री कहलाती है। गुड़री से बद्धी कसी रहती है और तबला जमीन पर टिकता है।

डग्गा अथवा बायां के अंग

क. **कूड़ी** – जिस प्रकार दाहिने तबले में लकड़ी पर कूड़ी कसी रहती है उसी प्रकार बायें अथवा ड़ग्गे में कूड़ी के मुंह पर पूड़ी कसी रहती है। मिट्टी के अतिरिक्त तांबे अथवा लकड़ी की भी कूड़ी होती है।

ख. **पूड़ी** – कूड़ी के मुख पर मढ़े गये समस्त चमड़े को पूड़ी कहते हैं। दाहिने के समान डग्गे की पूड़ी में भी चांटी, लव और स्याही का समावेश होता है।

ग. **चांटी** – पूड़ी के चारों ओर अन्दर की तरफ लगी हुई पट्टी को चांटी कहते हैं ।

घ. **स्याही** – पूड़ी में ऊपर की ओर स्थित चन्द्राकार काली वस्तु को स्याही कहते हैं ।

ड़. **लव** – चाटी और स्याही के बीच खाली स्थान को लव अथवा मैदान कहते हैं ।

च. **गजरा** – दाहिने के समान डग्गे में भी चमड़े के बने हुये हार में पूड़ी गुथी रहती है जिसे गजरा कहते हैं । गजरे पर ऊपर से आघात करने से बांया कसता है और नीचे आघात करने से ढीला होता है ।

छ. **डोरी** – पूड़ी को कसने के लिये कुछ डग्गों में डोरी और अधिकांश मे चमड़े की लम्बी पट्टी प्रयोग की जाती है । कुछ डग्गों में डोरी कसने के लिये छल्ले भी लगे रहते हैं ।

ज. **गुड़री** – दाहिने के समान बायें की पेंदी में भी चमड़े की माला होती है जिसे गुड़री कहते हैं ।

तबला मिलाने की विधि

दाहिने तबले को अधिक चढ़ाने –उतारने के लिये गट्टे को और सूक्ष्म उतारने –चढ़ाने के लिये गजरे को हथौड़ी से आघात करते हैं । तबला चढ़ाने के लिये ऊपर से और उतारने के लिये नीचे से आघात करते हैं । सर्वप्रथम दाहिने तबले को सुनते हैं कि उसे चढ़ाने की जरूरत हैं या उतारने की । उसके बाद यह देखते हैं कि अधिक अन्तर है या सूक्ष्म । इतना समझने के बाद आवश्यकतानुसार उचित स्थान पर दो रीतियों से आघात करते हैं, 1. क्रमानुसार गटटों पर आघात करते हैं, जैसे सर्वप्रथम पहले पर, उसके बाद दूसरे, तीसरे चौथे आदि पर तथा 2. एक स्थान पर आघात करने

के बाद उसके सामने के स्थान पर आघात करते हैं । सूक्ष्म अन्तर होने पर गजरे को आघात करते हैं । तबला चढ़ाने के लिये ऊपर से और उतारने के लिये नीचे से आघात करते हैं । बायें तबले मे गट्टा नहीं होता, अतः उसके गजरे पर आघात करते हैं ।

तबले को सा, म अथवा प से मिलाते हैं । स्वर का चुनाव राग के अनुसार होता है । अगर गायक ऐसा राग गाने वाला है जिसमें पंचम वर्ज्य है जैसे मालकोश, तो तबला कभी भी प से नहीं मिलाया जायेगा । जिन रागों में पंचम प्रयोग होता है तो उसके साथ तबले को पंचम से मिलायेंगे । जिन रागों में शुद्ध म तथ प दोनों स्वर वर्ज्य हैं, तो दाहिने तबले को सा से मिलाया जायेगा । म प के लिये कुछ बन्धन अवश्य है, किन्तु सा के लिये कोई बन्धन नहीं है । प्रत्येक राग के साथ तबले को सा से मिलाया जा सकता है । बड़े मुंह का तबला नीचे स्वर से और छोटे मुँह का तबला ऊंचे स्वर से सरलता से मिल जाता है ।

Taal - Deepchandi

ताल – दीपचन्दी

विभाग – 4, मात्रा – 14, (1, 4, 11 पर ताली – 8वीं मात्रा पर खाली)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
धा	धीं	S	धा	धा	तीं	S	ता	तीं	S	धा	धा	धीं	S
Dha	Dhin	S	Dha	Dha	Tin	S	Ta	Tin	S	Dha	Dha	Dhin	S
X			2				0			3			

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
धिन	धिन	। धागे	तिरकिट	। तू	ना	। कत	ता	। धागे	तिरकिट	। धी	ना	। धिन
x		0		2		0		3		4		x